647510 **0101203F1010** **Seat No :_____**

B.A. Semester - 2 (*CBCS*) Examination
March/April - 2023 (OLD COURSE)
FOUNDATION HINDI (FOUNDATION)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न. १ मैथिलीशरण गुप्त जी का व्यक्तित्व और कृतित्व लिखिए । (१४)

अथवा

प्रश्न. १ हिन्दी खण्डकाव्य का उद्भव और विकास लिखिए ।

प्रश्न. २ पंचवटी' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए । (१४)

अथवा

प्रश्न. २ "'पंचवटी' खण्डकाव्य इतिहास और कल्पना का समन्वय है ।" – सिद्ध कीजिए ।

प्रश्न. ३ लक्ष्मण का चरित्र-चित्रण कीजिए । (१४)

अथवा

प्रश्न. ३ शूर्पणखा का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

प्रश्न. ४ भावपक्ष एवं कलापक्ष की द्रष्टि से 'पंचवटी' खण्डकाव्य की समीक्षा कीजिए । (१४)

अथवा

प्रश्न. ४ खण्डकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'पंचवटी' खण्डकाव्य की समीक्षा कीजिए ।

प्रश्न. ५ (अ) विचार पल्लवन कीजिए । (किन्हीं एक) (०७)

1) हिंसा बुरी चीज है, पर दासता उससे भी बुरी है ।

अथवा

2) अविवेक आपत्तियों का घर है ।

प्रश्न. ५ (ब) संक्षेपण कीजिए । (किन्हीं एक) (०७)

ऋतुराज वसन्त के आगमन से ही शीत का भयंकर प्रकोप भाग गया। पतझड़ में पश्चिम-पवन ने जीर्ण-शीर्ण पत्रों को गिराकर लताकुंजों, पेड़-पौधों को स्वच्छ और निर्मल बना दिया। वृक्षों और लताओं के अंग में नूतन पत्तियों के प्रस्फुटन से यौवन की मादकता छा गयी। कनेर, करवीर, मदार, पाटल इत्यादि पुष्पों की सुगन्धि दिग्दिगन्त में अपनी मादकता का संचार करने लगी। न शीत की कठोरता, न ग्रीष्म का ताप। समशीतोष्ण वातावरण में प्रत्येक प्राणी की नस-नस में उत्फुल्लता और उमंग की लहरें उठ रही है। गेहूँ के सुनहले बालों से पवनस्पर्श के कारण रुनझून का संगीत फूट रहा है। पतों के अधरों पर सोया हुआ संगीत मुखर हो गया है। पलाश-वन अपनी अरुणिमा में फूला नहीं समाता है। ऋतुराज वसन्त के सुशासन और सुव्यवस्था की छटा हर ओर दिखायी पड़ती हैं। कलियों के यौवन की अँगड़ाई भ्रमरों को आमंत्रण दे रही है। अशोक के अग्निवर्ण कोमल एवं नवीन पत्ते वायु के स्पर्श से तरंगित हो रहे हैं। शीतकाल के ठिठुरे अंगों में नयी स्फूर्ति उमड़ रही है। वसन्त के आगमन के साथ ही जैसे जीर्णता और पुरातन का प्रभाव तिरोहित हो गया है। प्रकृति के कण-कण में नये जीवन का संचार हो गया है। आम्रमंजरियों की भीनी गन्ध और कोयल का पंचम आलाप, भ्रमरों का गुंजन और कलियों की चटक, वनों और उद्यानों के अंगों में शोभा का संचार- सब ऐसा लगता है जैसे जीवन में सुख ही सत्य है, आनन्द के एक क्षण का मूल्य पूरे जीवन को अर्पित करके भी नहीं चुकाया जा सकता है। प्रकृति ने वसन्त के आगमन पर अपने रूप को इतना सँवारा है, अंग-अंग को सजाया और रचा है कि उसकी शोभा का वर्णन असम्भव है, उसकी उपमा नहीं दी जा सकती।

अथवा

विश्वविद्यालय की कई महिमा रही है । शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा रोल रहा है नालंदा का । दस हजार विद्यार्थी और पन्द्रह सौ आचार्य थे । बौद्ध दर्शन, इतिहास, वेद, हेतु विद्या, न्याय शास्त्र, व्याकरण, चिकित्सा शास्त्र, ज्योतिष आदि के शिक्षण की व्यवस्था इस विश्वविद्यालय में थी । कई विख्यात आचार्यों का नाम नालंदा से जुड़ा था । लेकिन नालंदा के इतिहास में काला धब्बा भी लग गया है । यह काला धब्बा नालंदा के पुस्तकालय को लेकर है । बख्तियार खिलजी के आक्रमणों से देश की जो सबसे बड़ी हानि हुई वह थी वहाँ के इन पुस्तकालयों को आग के हवाले करना । इस अग्निकांड में वे अमूल्य ग्रंथ सदा के लिए भस्म हो गए, जिनका उल्लेख मात्र तिब्बती और चीनी ग्रंथों में मिलता है । तिब्बती विवरणों से पता चलता है कि नालंदा में पुस्तकालयों का एक विशिष्ट क्षेत्र था ।

****